STEPPING STONE
SCHOOL (HIGH)

CLASS8

Subject:Hindi **Date:28-05-2020**
Topic- prose **TimeLimit-30mins**

WorksheetNo.:12

[Copythequestionsandsolvethemonasheetofpaperdatewise.Keep theworksheetsreadyinafiletobesubmitedontheopeningday.]

2

ईदगाह

प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक ईदगाह को भी माना जाता है। इस कहानी में लेखक एक छोटे से बच्चे के माध्यम से भारत के उन बच्चों की कथा कहते हैं जो अभावों में जीते हुए ही जीवन के व्यावहारिक ज्ञान को प्राप्त करते हैं।

गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुरते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर से सुई-तागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जाएगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-भेंटना, दोपहर के पहले लौटना असंभव है।

लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। उन्हें जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते।

इन्हें गृहस्थी की चिंताओं से क्या प्रयोजन! सेंवइयों के लिए दूध और शक्कर घर में है या नहीं, इनकी बला से, ये तो सेंवइयाँ खाएँगे।

बार-बार जेब से अपना खजाना निकाल कर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है, एक-दो, दस, बारह! उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास पंद्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत पैसों में अनगिनत चीज़ें लाएँगे—खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और जाने क्या-क्या।

और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है—हामिद। वह चार-पाँच साल का गरीब, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई। किसी को पता न चला क्या बीमारी है। कहती तो कौन सुनने वाला था? दिल पर जो बीतती थी, वह दिल में ही सहती थी और जब न सहा गया तो संसार से विदा हो गई।

Edit with WPS Office

Scanned with CamScanner

अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। उसके अब्बाजान रुपए कमाने गए हैं। बहुत-सी थैलियाँ लेकर आएँगे। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए अच्छी-अच्छी चीजें लाने गई हैं, इसलिए हामिद प्रसन्न है। आशा तो बड़ी चीज़ है और फिर बच्चों की आशा! उनकी कल्पना तो राई का पर्वत बना लेती है।

अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं! आज आबिद होता, तो क्या इसी तरह ईद आती और चली जाती! इस अंधकार और निराशा में वह डूबी जा रही है। किसने बुलाया था इस निगोड़ी ईद को? इस घर में उसका काम नहीं; लेकिन हामिद! उसे किसी के मरने-जीने से क्या मतलब? उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दलबल लेकर आए, हामिद की आनंद भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है—तुम डरना नहीं अम्माँ, मैं सबसे पहले आऊँगा, बिलकुल न डरना। अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का बाप अमीना के सिवा और कौन है! उसे कैसे अकेले मेले में जाने दे? तीन कोस (लगभग 10 किलोमीटर) चलेगा कैसे? पैर में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर उसे गोद ले लेगी, लेकिन यहाँ सेंवइयाँ कौन पकाएगा? पैसे होते, तो लौटते-लौटते सब सामग्री जमा करके चटपट बना लेती। यहाँ तो घंटों चीजें जमा करते लगेंगे। माँगे ही का तो भरोसा ठहरा।

उस दिन फहीमन के कपड़े सिले थे। आठ आने (पचास पैसे) मिले थे। उस अठन्नी (पचास पैसे) को ईमान की तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लिए, लेकिन कल ग्वालन सिर पर सवार हो गई, तो क्या करती! तीन पैसे हामिद की जेब में, पाँच पैसे अमीना के बटुवे में। यही तो बिसात है और ईद का त्योहार, अल्लाह ही बेड़ा पार लगाए।

गाँव से मेला चला और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथ वालों का इंतज़ार करते। यह लोग क्यों इतना धीरे-धीरे चल रहे हैं।

हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता है? शहर का दामन आ गया। सड़क के दोनों ओर अमीरों के बगीचे हैं।

बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगीं। यह अदालत है, यह कालिज है, यह क्लबघर है! क्लबघर में जादू होता है। बड़े-बड़े तमाशे होते हैं, पर किसी को अंदर नहीं जाने देते और यहाँ शाम को साहब लोग खेलते हैं और मेमें भी खेलती हैं, सच! हमारी अम्माँ को वह दे दो, क्या नाम है, बैट, तो उसे पकड़ ही न सकें। घुमाते ही लुढ़क जाएँ।

महमूद ने कहा—हमारी अम्मीजान का तो हाथ काँपने लगे अल्लाह कसम।

Scanned with CamScanner

मोहसिन बोला—चलो, मनों आटा पीस डालती हैं। ज़रा-सा बैट पकड़ लेंगी, तो हाथ काँपने लगेंगे। सैकड़ों घड़े पानी रोज़ निकालती हैं। पाँच घड़े तो तेरी भैंस पी जाती है। किसी मेम को एक घड़ा पानी भरना पड़े तो आँखों तक अँधेरी आ जाए।

महमूद—लेकिन दौड़तीं तो नहीं, उछल-कूद तो नहीं कर सकतीं।

मोहसिन—हाँ, उछल-कूद नहीं कर सकतीं, लेकिन उस दिन मेरी गाय खुल गई थी और चौधरी के खेत में जा पड़ी थी, अम्माँ इतना तेज़ दौड़ीं कि मैं उन्हें न पा सका, सच।

आगे चले। हलवाइयों की दुकानें शुरू हुईं, आज खूब सजी हुई थीं। अब आगे बढ़ने पर बस्ती घनी होने लगी। ईदगाह जाने वालों की टोलियाँ नज़र आने लगीं। एक से एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए। कोई इक्के-ताँगे पर सवार, कोई मोटर पर, सभी इत्र में बसे, सभी के दिलों में उमंग। ग्रामीणों का यह छोटा-सा दल अपनी विपन्नता से बेखबर, संतोष और धैर्य में मगन चला जा रहा था। बच्चों के लिए नगर की सभी चीजें अनोखी थीं। जिस चीज़ की ओर ताकते, ताकते ही रह जाते और पीछे से बराबर हॉर्न की आवाज़ होने पर भी न चेतते। हामिद तो मोटर के नीचे जाते-जाते बचा।

सहसा ईदगाह नज़र आया। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया है। नीचे पक्का फर्श है और रोज़ेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गई हैं।

नमाज़ खत्म हो गई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौनों की दुकान पर धावा होता है। बच्चे झूले पर बैठे हुए हैं, हामिद खड़ा उन्हें देख रहा है। यह देखो हिंडोला है। एक पैसा दे कर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते मालूम होंगे तो कभी ज़मीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट छड़ों से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों

Scanned with CamScanner

Edit with WPS Office

का मज़ा लो। महमूद, मोहसिन, नूरे और सम्मी इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का एक तिहाई ज़रा-सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चर्खियों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई हैं। तरह-तरह के खिलौने हैं—सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती और धोबिन और साधु। वाह! कितने सुंदर खिलौने हैं। महमूद सिपाही लेता है, खाकी वरदी और लाल पगड़ी वाला कंधे पर बंदूक रखे हुए है।

मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर झुकी हुई है, ऊपर मशक रखे हुए है। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए हैं। कितना प्रसन्न है! शायद कोई गीत गा रहा है। नूरे को वकील से प्रेम है। कैसी विद्वता है, उसके मुख पर! काला चोगा, नीचे सफ़ेद अचकन, अचकन के सामने की जेब घड़ी, सुनहरी ज़ंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किए चले आ रहे हैं।

यह सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं। इतने ... वह ले! खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े, तो चूर-चूर हो जाए। ज़रा पानी पड़े तो सा... ुल जाए। खिलौने लेकर वह क्या करेगा, किस काम के!

मोहसिन कहता है—मेरा भिश्ती रोज़ पानी दे जाएगा साँझ-सवेरे।

महमूद—और मेरा सिपाही घर का पहरा देगा। कोई चोर आएगा, तो फ़ौरन बंदूक से फ़ायर कर देगा।

नूरे—और मेरा वकील खूब मुकदमा लड़ेगा।

सम्मी—और मेरी धोबिन रोज़ कपड़े धोएगी।

हामिद खिलौनों की निंदा करता है—मिट्टी ही के तो हैं, गिरें तो चकनाचूर हो जाएँ। लेकिन ललचाई हुई आँखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि ज़रा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता। उसके हाथ अनायास ही लपकते हैं। लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते हैं, विशेष कर जब अभी नया शौक है। हामिद ललचाता रह जाता है। खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब-जामुन, किसी ने सोहन हलवा। मज़े से खा रहे हैं। हामिद बिरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता! ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है।

मोहसिन कहता है—हामिद, रेवड़ी ले जा, कितनी खुशबूदार है!

हामिद को संदेह हुआ, यह केवल क्रूर विनोद है। मोहसिन इतना उदार नहीं है, लेकिन यह जानकर भी वह उसके पास जाता है। मोहसिन दोने से एक रेवड़ी निकालकर हामिद की ओर बढ़ाता है। हामिद हाथ फैलाता है। मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद, नूरे और सम्मी खूब तालियाँ बजा-बजाकर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

Scanned with CamScanner

मोहसिन—अच्छा, अब की ज़रूर देंगे हामिद, अल्लाह कसम ले जा।

हामिद—रखे रहो। क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं?

सम्मी—तीन ही पैसे तो हैं। तीन पैसे में क्या-क्या लोगे?

महमूद—हमसे गुलाब-जामुन ले जाओ, हामिद। मोहसिन बदमाश है।

हामिद—मिठाई कौन बड़ी नेमत है। किताब में इसकी कितनी बुराइयाँ लिखी हैं।

मोहसिन—लेकिन दिल में कह रहे होंगे कि मिले तो खा लें। अपने पैसे क्यों नहीं निकालते?

महमूद—हम समझते हैं, इसकी चालाकी। जब हमारे सारे पैसे खर्च हो जाएँगे, तो हमें ललचा-ललचा कर खाएगा।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की, कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण न था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं।

हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख़याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी! फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज़ हो जाएगी। खिलौने से क्या फ़ायदा? व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं। ज़रा देर ही तो खुशी होती है। फिर तो खिलौने को कोई आँख उठाकर नहीं देखता। यह तो घर पहुँचते-पहुँचते टूट-फूटकर बराबर हो जाएँगे।

चिमटा कितने काम की चीज़ है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो।

हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं। सबील पर सबके सब शरबत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं। इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते हैं, मेरे साथ खेलो। मेरा यह काम करो। अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा, तो पूछूँगा। खाएँ मिठाइयाँ, आप मुँह सड़ेगा, फोड़े-फुंसियाँ निकलेंगी, आप ही ज़बान चटोरी हो जाएगी। तब घर से पैसे चुराएँगे और मार खाएँगे। किताब में झूठी बातें थोड़े ही लिखी हैं। मेरी ज़बान क्यों खराब होगी?

अम्माँ चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी—मेरा बच्चा अम्माँ के लिए चिमटा लाया है। हज़ारों दुआएँ देंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएँगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी, हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौने पर कौन इन्हें दुआएँ देगा? बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं, और तुरंत सुनी जाती हैं। मेरे पास पैसे नहीं हैं। तभी मोहसिन और महमूद यों मिज़ाज दिखाते हैं।

उसने दुकानदार से पूछा—यह चिमटा कितने का है?

Scanned with CamScanner

Edit with WPS Office

'छः पैसे लगेंगे।'

हामिद का दिल बैठ गया।

'ठीक-ठीक बताओ!'

'ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो लो, नहीं चलते बनो।'

हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा—तीन पैसे लोगे?

यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ न दीं। बुला कर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक है और शान से अकड़ता हुआ सँगियों के पास आया।

मोहसिन ने हँसकर कहा—यह चिमटा क्यों लाया, पगले, इससे क्या करेगा?

हामिद ने चिमटे को पटककर कहा—ज़रा अपना भिश्ती ज़मीन पर गिरा दो। सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जाएँ बच्चू की।

महमूद बोला—तो यह चिमटा कोई खिलौना है?

हामिद—खिलौना क्यों नहीं है! अभी कंधे पर रखा, बंदूक हो गई। हाथ में लिया, फकीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ, तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने कितना ही ज़ोर लगाएँ, मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है—चिमटा।

सम्मी ने खँजरी ली थी, प्रभावित होकर बोला—मेरी खँजरी से बदलोगे, दो आने की है।

हामिद ने खँजरी की ओर उपेक्षा से देखा—मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले।

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया, लेकिन अब पैसे किसके पास धरे हैं? फिर मेले से दूर निकल आए हैं। नौ कब के बज गए, धूप तेज़ हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी हो रही है। उससे ज़िद भी करें, तो चिमटा नहीं मिल सकता। हामिद है बड़ा चालाक। इसलिए बदमाश ने अपने पैसे बचा रखे थे।

दोनों ओर से शास्त्रार्थ होने लगा। उसके पास न्याय का बल है और नीति की शक्ति। एक ओर मिट्टी है, दूसरी ओर लोहा, जो इस वक्त अपने को फौलाद कह रहा है। वह अजेय है, घातक है। अगर कोई शेर आ जाए, मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जाएँ, मियाँ सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भागें, वकील साहब की नानी मर जाए, चोगे में मुँह छिपाकर ज़मीन पर लेट जाएँ। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रुस्तमेहिंद लपक कर शेर की गरदन पर सवार हो जाएगा और उसकी आँखें निकाल लेगा।

मोहसिन ने कहा—अच्छा, पानी तो नहीं भर सकता।

Scanned with CamScanner

हामिद ने चिमटे को सीधा खड़ा करके कहा—भिश्ती को एक डाँट बताएगा, तो दौड़ा हुआ पानी ला कर उसके द्वार पर छिड़कने लगेगा।

मोहसिन परास्त हो गया, पर महमूद बोला—अगर बच्चू पकड़े जाएँ, तो अदालत में बँधे-बँधे फिरेंगे। तब तो वकील साहब के पैरों पड़ेंगे।

हामिद इस प्रबल तर्क का जवाब न दे सका। उसने पूछा—हमें पकड़ने कौन आएगा?

नूरे ने अकड़ कर कहा—यह सिपाही बंदूक वाला।

हामिद ने मुँह चिढ़ाकर कहा—यह बेचारे हम बहादुर रुस्तमेहिंद को पकड़ेंगे। अच्छा लाओ, अभी ज़रा कुश्ती हो जाए। इसकी सूरत देखकर दूर से भागेंगे। पकड़ेंगे क्या बेचारे।

मोहसिन को एक नई चोट सूझ गई—तुम्हारे चिमटे का मुँह रोज़ आग में जलेगा।

हामिद ने तुरंत जवाब दिया—आग में बहादुर ही कूदते हैं जनाब, तुम्हारे यह वकील, सिपाही और भिश्ती घर में घुस जाएँगे।

महमूद ने एक ज़ोर लगाया—वकील साहब कुरसी-मेज़ पर बैठेंगे, तुम्हारा चिमटा तो बावरचीखाने में ज़मीन पर पड़ा रहेगा।

इस तर्क ने सम्मी और नूरे को भी सजीव कर दिया! कितने ठिकाने की बात कही है पट्ठे ने। चिमटा बावरचीखाने में पड़ा रहने के सिवा और क्या कर सकता है?

हामिद को कोई पकड़ता हुआ जवाब न सूझा तो उसने धाँधली शुरू की—मेरा चिमटा बावरचीखाने में नहीं रहेगा। वकील साहब कुरसी पर बैठेंगे, तो जाकर उन्हें ज़मीन पर पटक देगा और उनका कानून उनके पेट में डाल देगा।

बात कुछ नहीं बनी। लेकिन कानून को पेट में डालने वाली बात छा गई। ऐसी छा गई कि तीनों सूरमा मुँह ताकते रह गए, हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमेहिंद है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती।

हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा? टूट-फूट जाएँगे। हामिद का चिमटा तो बना रहेगा बरसों!

सँधि की शर्तें तय होने लगीं। मोहसिन ने कहा—ज़रा अपना चिमटा दो, हम भी देखें। तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तों को मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया, और

Scanned with CamScanner

Edit with WPS Office

उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने खूबसूरत खिलौने हैं!

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके अब्बा ने केले खाने को दिए। महमूद ने केवल हामिद को साझी बनाया। उसके अन्य मित्र मुँह ताकते रह गए। यह उस चिमटे का प्रसाद था।

ग्यारह बजे गाँव में हलचल मच गई। मेले वाले आ गए। मोहसिन की छोटी बहन ने दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के जो उछली, तो मियाँ भिश्ती नीचे आ रहे और सुरलोक सिधारे।

मियाँ नूरे के वकील का अंत उनकी प्रतिष्ठानुकूल इससे ज़्यादा गौरवमय हुआ। वकील ज़मीन पर या ताक पर तो नहीं बैठ सकता। उसकी मर्यादा का विचार तो करना ही होगा। दीवार में दो खूँटियाँ गाड़ी गईं। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर कागज़ का कालीन बिछाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब स्वर्गलोक से मृत्युलोक में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया!

अब रहा महमूद का सिपाही। उसे चटपट गाँव का पहरा देने का चार्ज मिल गया, लेकिन पुलिस का सिपाही कोई साधारण व्यक्ति तो नहीं, जो अपने पैरों चले। वह पालकी पर चलेगा। एक टोकरी आई, उसमें कुछ लाल रंग के फटे-पुराने चिथड़े बिछाए गए, जिसमें सिपाही साहब आराम से लेटे। नूरे ने यह टोकरी उठाई और अपने द्वार का चक्कर लगाने लगे। उनके दोनों छोटे भाई सिपाही की तरह 'छोने वाले, जागते लहो' पुकारते चलते हैं। महमूद को ठोकर लग जाती है। टोकरी उसके हाथ से छूट कर गिर पड़ती है और मियाँ सिपाही अपनी बंदूक लिए जमीन पर आ जाते हैं और उनकी एक टाँग में विकार आ जाता है।

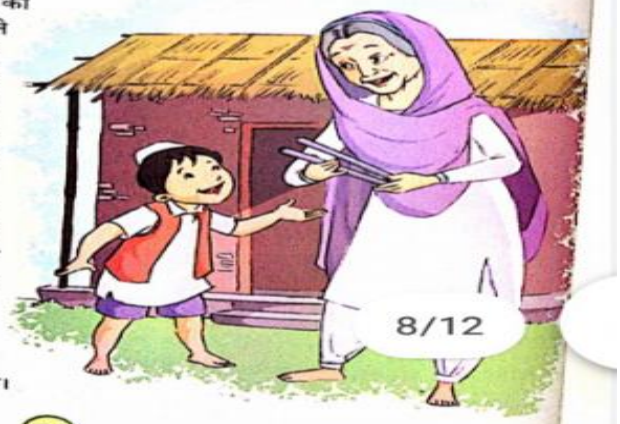

उधर अमीना हामिद की आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

Scanned with CamScanner

'यह चिमटा कहाँ था?'

'मैंने मोल लिया है।'

'कै पैसे में?'

'तीन पैसे दिए।'

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुई, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा! 'सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?'

हामिद ने अपराधीभाव से कहा—तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे लिया।

बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा? इतना जब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद हो गया।

—प्रेमचंद

शब्दार्थ (Word - Meaning)

तागा	— धागा	प्रयोजन	— मतलब	अब्बाजान	— पिताजी	प्रकाश	— रोशनी
अम्मीजान	— माँ	विपन्नता	— गरीबी	हिंडोला	— झूला	कोष	— खजाना
अनायास	— अचानक	बटुआ	— पर्स	विनोद	— मज़ाक	निंदा	— आलोचना

अभ्यास

पाठ-ज्ञान (Textual Literacy)

मौखिक (Speaking Skills)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—
   (क) गाँव में हलचल क्यों थी?
   (ख) ईदगाह जाने की क्या तैयारियाँ हो रही थीं?
   (ग) बच्चे क्या गिन रहे थे?
   (घ) हामिद के माता-पिता कैसे मर गए?
   (ङ) हामिद किसके साथ रहता था?

8/12
9/12
Edit with WPS Office

उपर्युक्त कहानी ईदगाह वर्ग -(८) की पाठ्य पुस्तक से ली गई पाठ है |

कहानी का शब्दार्थ याद करे तथा नीचे लिखे सारांश को पढ़

इदगाह हिन्दुस्तानी लेखक मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखी एक हिंदुस्तानी कहानी है मुन्शी प्रेमचंद ने नवाब राय के नाम से उरुद्दु में लिखा था

इदगाह ने एक चार वर्षीय अनाथ की कहानी बताई है, जो अपनी दादी अमिना के साथ रहती है। हामिद, कहानी का नायक, हाल ही में अपने माता-पिता को खो दिया है; हालांकि उनकी दादी ने उन्हें बताया कि उनके पिता ने पैसे कमाने के लिए छोड़ दिया है और उनकी मां अल्लाह के लिए सुंदर उपहार लाने के लिए गई है। यह उम्मीद के साथ हमीद को भरता है, और अमिना की गरीबी और उसके पोते की भलाई के आसपास की चिंता के बावजूद, हामिद खुश और सकारात्मक बच्चा है।

Edit with WPS Office

कहानी ईद की सुबह से शुरू होती है, क्योंकि हामिद ने ईदगाह के लिए गांव के अन्य लड़कों के साथ बाहर किया था। हामिद विशेष रूप से अपने दोस्तों, गरीब कपड़े पहने और भूखे दिखने के बगल में गरीब है, और महोत्सव के लिए ईदी के रूप में केवल तीन पैसे हैं। दूसरे लड़के सवारी, कैंडीज और खूबसूरत मिट्टी के खिलौने पर अपनी जेब से पैसा खर्च करते हैं, और हमीद को तंग करते हैं जब वह क्षणिक आनंद के लिए पैसे की बर्बादी के रूप में खारिज करते हैं। जबकि उनके दोस्त खुद का आनंद ले रहे हैं, वह अपने प्रलोभन पर काबू पाकर और एक हार्डवेयर की दुकान में जाते हैं, जो चिड़ियों की एक जोड़ी खरीदने के लिए याद करते हैं, याद करते हुए कि उनकी दादी रोटियां पकाने के दौरान अपनी उंगलियों को जलती है। 2

जब वे गांव लौटते हैं, तो हामिद के दोस्तों ने उन्हें अपनी खरीद के लिए चिढ़ाया, अपने खिलौनों के गुणों को अपने चिमटे के ऊपर बढ़ाया। हामिद कई चालाक तर्कों के साथ रिटवर्ट करते हैं और लंबे समय से पहले अपने मित्रों को अपने ही प्लेथिंग्स के मुकाबले ज्यादा चिंतित होते हैं, यहां तककि उनके लिए अपनी वस्तुओं का व्यापार करने की पेशकश करते हैं, जो हामिद ने मना कर दिया। कहानी एक छूने वाले नोट पर समाप्त होती है, जब हामिद ने चिमटा अपनी दादी को उपहार में दिए। पहली बार वह उसे मेले में खाने या पीने के लिए कुछ खरीदने के बजाय खरीदारी करने के लिए डांटती है, जब तक हामिद उसे याद नहीं दिलाता कि वह अपनी उंगलियों को दैनिक कैसे जलती है। वह इस पर आँसू में फंसती है और उसे अपनी दया के लिए आशीर्वाद देता है।

3

Edit with WPS Office